मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 66400/97

धर्म के नाम पर शिकार होना चाहते हों तो पाखंडी क्यों न शिकार करें 3
घरों व कार्यालयों के आसपास इकट्ठा न रहने दें पानी 4
मोदी सरकार के खिलाफ है देश का राजनीतिक मिजाज 5
शाह ने घोषित किया यूपी को भयमुक्त 6
गहरे जल संकट की ओर बढ़ रहा ईएसआई मेडिकल कॉलेज 8

वर्ष 35 | अंक 52 | फरीदाबाद | 7-13 नवम्बर 2021 | फोन-8851091460 | ₹3.00

एसएचओ सूरजकुंड ने झील से संदिग्ध शव निकलवाने से किया इंकार

फ़रीदाबाद (म.मो.) अनंगपुर गांव के 30 वर्षीय अमित भड़ाना के लापता होने के 13 दिन के बाद ग्रामीणों को 28 अक्तूबर को पता लगा कि उसका शव उनके ही क्षेत्र की एक बड़ी झील में मौजूद है। थाना सूरजकुंड को सूचना दी गयी तो एसएचओ सोहनपाल ने खुद मौके पर जाने के बजाय चार पुलिकर्मी भेज दिये। इस बात का पता जब सम्बंधित एसीपी को लगा तो उन्होंने एसएचओ को हड़काया और मौके पर पहुंचने का आदेश दिया।

बड़े अनमने मन से सोहनपाल मौके पर पहुंचे तो उस वक्त शाम के 6 बज चुके थे। अंधेरे का बहाना कर एसएचओ

एसएचओ सोहनपाल : मुर्दे ढोने थोड़े ही आया हूं

ने कहा कि रात में शव ढूंढना मुश्किल होगा, इस लिये सुबह कार्यवाही शुरू करेंगे। इतना कह कर वे चलते बने। लेकिन जाने से पहले ग्रामीणों ने इस एसएचओ बने अपने सजातीय भाई को अच्छी खरी-खोटी सुनाने के बाद शव तलाशने का काम खुद शुरू कर दिया। रोशनी के लिये वाहनों की हेडलाइटों का इस्तेमाल करते हुए गांव के 18 नौजवान लड़के झील में उतरे। कई घंटों की जोखिम भरी मेहनत के बाद वे लोग शव को निकाल पाने में सफ़ल हुए। देखा जाय तो इस अभियान में एसएचओ को कुछ खास नहीं करना था। अधिक से अधिक वह प्रशिक्षित गोताखोर बुला सकता था, फ़ायर ब्रिगेड की सहायता प्राप्त करने के साथ-साथ रोशनी का बेहतर इन्तजाम कर सकता था। इसके अलावा एसएचओ के हाजिर रहने से ग्रामीणों की हौंसला अफ़जाई हो सकती थी।

इस ओछी हरकत के बाद सोहन पाल ने अपनी पीठ थपथपाते हुए कुछ तथाकथित बड़े राष्ट्रीय अखबारों में खबर छपवाई कि उन्होंने रात भर बड़ी मेहनत करके शव को झील से निकलवाया। संदर्भवश यह बताना भी जरूरी है कि शव तीन-चार दिन पुराना होने की वजह से काफ़ी गल-सड़ चुका था। उसके कई हिस्सों को जलजीवों ने खा भी लिया था। यदि रात भर और झील में पड़ा रहा होता तो जलजीव उसे और भी खा सकते थे।

गौरतलब है कि सोहनपाल ने, केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर व मुख्यमंत्री खट्टर की सिफ़ारिशों से थाना सूरजकुंड कोई लाशें ढूंढने के लिये तो पकड़ा नहीं है। उसका तो एकमात्र लक्ष्य यहां से लूट कमाई करना है, जो क्षेत्र की जनता को भी स्पष्ट नज़र आ रहा है।

मैनहोल में फ़िर गिरी एक लड़की, पखवाड़े में दूसरा हादसा अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही न होने का परिणाम

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक 30 नवम्बर को पर्वतीया कॉलोनी के मैनहोल में गिरने का एक और हादसा हो गया। नेतराम सरिया वाली गली से जब 11 वर्षीय छात्रा चंचल स्कूल से लौट रही थी तो वह अपनी सहेलियों के साथ वार्तालाप में इस कदर मशगूल थी कि उसे ध्यान नहीं रहा कि नगर निगम ने जहां-तहां मौत के मुंह खोल रखे हैं। परिणामस्वरूप वह एक मैनहोल में गिर गयी। शुकर यह रहा कि मैनहोल में पानी इतना था कि वह केवल गर्दन तक ही डूब पाई, वरना तो दो-चार मिनट में उसके प्राण-पखेरू उड़ जाते।

दूसरी गनीमत यह रही कि उसी समय उसके स्कूल का, 11 वीं जमात का छात्र हितेष भी वहां से गुजर रहा था और उसकी नज़र इस हादसे पर पड़ गयी। उसने बिना कोई समय गंवाये तुरंत शोर मचाते हुए मैनहोल में छलांग लगा दी। शोर सुन कर जब तक आस पास के लोग एकत्र हुए, हितेश ने उसे सुरक्षित रूप से सम्भाल लिया था। इसी बीच एकत्र हुए लोगों की सहायता से दोनों बच्चे मौत के मुंह से जिंदा निकल आये।

विदित है कि इसी क्षेत्र में दिनांक 21 अक्टूबर को एक महिला अपनी गोद में लिये बच्चे सहित मैनहोल में गिरी थी। उस वक्त भी एक राहगीर लक्खा सिंह टैक्सी ड्राइवर ने जान का जोखिम लेकर मैन होल में कूद कर शिशु सहित महिला की जान बचाई थी। उस समाचार को प्रकाशित करते समय '**मज़दूर मोर्चा**' ने लिखा था कि किस तरह पल्ला चौक के निकट एक महिला ऐसे ही मैनहोल में गिरी थी जिसे बचाने को मैनहोल में एक राहगीर उतरा तो दोनों की ही मौत हो गयी थी। उस हादसे को लेकर नगर निगम के किसी भी अधिकारी के विरुद्ध एफ़आईआर दर्ज नहीं हुई थी; हां राज्य मानवाधिकार द्वारा संज्ञान

लिये जाने पर दोनों मृतकों के परिजनों को नगर निगम फंड से पांच-पांच लाख का मुआवजा दिला दिया गया था। यदि उस वक्त जिम्मेदार अधिकारियों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज होती और उनकी जेब से मोटा मुआवजा मृतकों के परिजनों को दिलाया गया होता तो फ़िर कभी इस तरह के हादसे नहीं होते। वैसे इन घटनाओं को हादसा कहना ही गलत है, ये तो एक तरह से निगम अधिकारियों द्वारा जनता को मारने के लिये बिछाये गये जाल हैं।

सांड ने मार डाली बुजुर्ग महिला

गांव खेड़ीकला, थाना बीपीटीपी में 90 वर्षीया शांति देवी गाय को रोटी खिला कर पुण्य कमाने के चक्कर में बेमौत मारी गयी। दरअसल शहर के मुहल्ले दर मुहल्ले घूमती भूखों मरती गायों व सांडों का किसी एक-आध रोटी से तो पेट भरने वाला नहीं, इसलिए एक रोटी के लिये तमाम भूखी गाय व सांड रोटी खिलाने वाले पर इस कदर झपट पड़ते हैं कि रोटी खिलाने वाला ही चपेट में आकर मारा जाता है। इसके अलावा सड़कों पर बैठे ये पशु रात के अंधेरे में कई बार वाहन चालकों को दिखाई भी नहीं पड़ते तो दुर्घटना हो जाती है। कई बार सांड आपस में लड़ते हुए भी दुर्घटना का कारण बन जाते हैं। शायद ही कोई माह ऐसा जाता होगा जिसमें इस तरह की दो-चार घातक दुर्घटनाएं न होती हों।

नगर निगम द्वारा गौशालायें बना कर पशुओं के रख-रखाव पर लाखों रुपये प्रति माह के बिल बनाये जाते हैं जबकि तमाम पशु शहर की सड़कों पर आवारा घूमते हुए आम लोगों की जान के ग्राहक बने रहते हैं। कायदे से पुलिस को इन मौतों का संज्ञान लेकर निगम अधिकारियों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाई करनी चाहिए, तभी ये घटनाएं रुक पायेंगी।

उपचुनाव का झटका, मोदी को दे पटका, पेट्रोलियम हुआ सस्ता

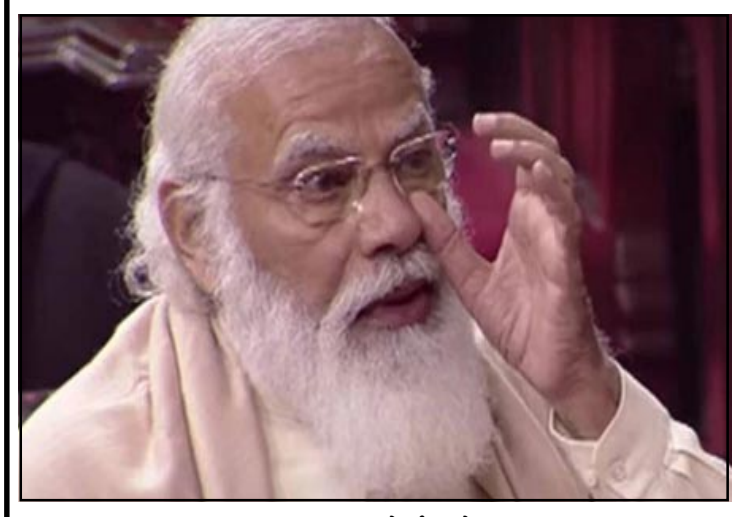

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

वोट की मार खाने के बाद खिसियाने हुए प्रधानमंत्री मोदी ने पेट्रोल व डीजल सस्ता करते हुए जनता को दीवाली तोहफा देने का नाटक किया। दरअसल ये तोहफा मोदी ने जनता को नहीं दिया बल्कि जनता ने उनके गिरेबान में हाथ डालकर छीन लिया है। चुनाव में इस हार के बाद मोदी ने पेट्रोल से 5 रुपए और डीजल से 10 रुपए एक्साइज शुल्क घटाया तो उस पर लगने वाला राज्यों का वैट भी अलग-अलग दरों से घट गया। इसका प्रभाव पेट्रोल कहीं 6 रुपए सस्ता तो कहीं 8 रुपए सस्ता हुआ, इसी तरह डीजल भी 12 से 17 रुपए तक सस्ता हो गया।

दीवाली से एक दिन पहले 29 उपचुनावों के नतीजे घोषित हुए थे। इनमें सबसे अधिक भाजपा को चुभने वाले नतीजे हिमाचल प्रदेश के रहे। जहां विधानसभा की 3 सीटे और लोकसभा की 1 सीट भाजपा के हाथों से निकलकर कांग्रेस को चली गयी। इतिफाक से यह तमाम सीटें हिमाचल के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर के क्षेत्र से है। इसलिए इनकी सीधी जवाबदेही उन पर आ पड़ी। लेकिन मुख्यमंत्री ने भी पलट जवाब देने में देर न लगायी और स्पष्ट कह दिया कि इसका मुख्य कारण बढ़ती महंगाई है। यानी कि सीधे मोदी की आंखों में उंगली दे मारी। इसी के परिणामस्वरूप पेट्रोलियम पदार्थों में यह कटौती जनता को "उपहार स्वरूप" मिल पायी। हिमाचल के अलावा बंगाल की चारों सीटें, राजस्थान की दोनों सीटे व हरियाणा की एक सीट पर भाजपा हारी।

इन परिणामों से जनता को बड़ा स्पष्ट संदेश मिला है कि यह भाजपायी वोट के डंडे से ही डरते हैं। यदि आने वाले यूपी चुनाव में जनता ने इनको पटकनी दे मारी तो पेट्रोल का रेट 40 रूपए होना तय माना जा रहा है। लेकिन यदि भूल से कहीं मोदी का 2024 में फिर से गद्दी सौंप दी तो यह 'काले अंग्रेज.' साहब दिए हुए 'उपहारों' को ब्याज सहित वसूलने में कतई नहीं हिचकेंगे।

यानी, मोदी का लोकतंत्र को संदेश है कि बांह उमेठी है तो महंगाई कुछ कम की, अगली बार कस कर लात मारना।